## पद १२९

(राग: मांड - ताल: धुमाळी)

संत तुमची अगाध करणी। जगा प्रकाश जेवीं तरणीं॥१॥ जड जडाशीं न ओळखे। भेटी होतां न सुखे दु:खे॥२॥ जड पदार्थ परतंत्र। तुम्ही चेतन स्वार्थ स्वतंत्र।।३।। स्वप्न जागृती होय नाश। तुम्ही जाणते अविनाश।।४॥ हेंचि ओळखा ओळखा। अक्रिय अलिप्त सुख-दु:खा।।५।। जड क्रिया चेतन ज्ञान। सत्ता स्फोरक असंग पूर्ण।।६।। सत्यबोध चिन्मार्ताण्ड सकलमतीं माणिक अखंड ॥७॥